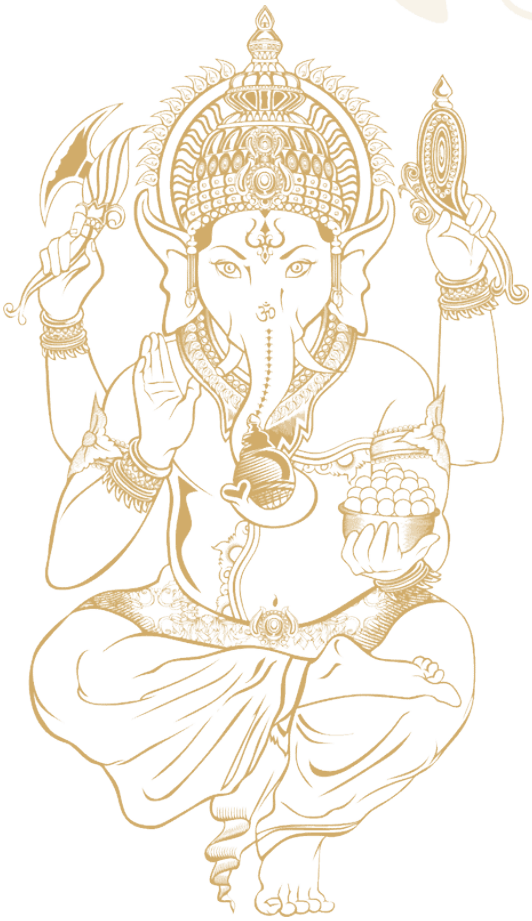

Vaayu

23 Jun 2025

12:00 AM

Jamshedpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119104801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**22-23/06/2025**
दिन	रवि-सोमवार
जन्म समय	**00:00:00 घंटे**
इष्ट	47:26:34 घटी
स्थान	**Jamshedpur**
राज्य	Jharkhand
देश	India

अक्षांश	22:47:00 उत्तर
रेखांश	86:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:14:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	00:14:48 घंटे
वेलान्तर	-00:02:02 घंटे
साम्पातिक काल	18:19:34 घंटे
सूर्योदय	05:01:22 घंटे
सूर्यास्त	18:33:00 घंटे
दिनमान	13:31:38 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	07:22:10 मिथुन
लग्न के अंश	12:17:51 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मीन - गुरु
राशि-स्वामी	**वृष - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**कृतिका - 2**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	धृति
करण	तैतिल
गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरुड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	इ-ईश्वर
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	आषाढ़	2
पंजाबी	संवत : 2082	आषाढ़	9
बंगाली	सन् : 1432	आषाढ़	8
तमिल	संवत : 2082	आनी	9
केरल	कोल्लम : 1200	मिथुनम	9
नेपाली	संवत : 2082	आषाढ़	9
चैत्रादि	संवत : 2082	आषाढ़	कृष्ण 13
कार्तिकादि	संवत : 2082	ज्येष्ठ	कृष्ण 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 12
तिथि समाप्ति काल _____: 25:22:16
जन्म तिथि _____: 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 17:38:20 घंटे
जन्म योग _____: कृतिका
सूर्योदय कालीन योग ____: सुकर्मा
योग समाप्ति काल _____: 16:57:05 घंटे
जन्म योग _____: धृति
सूर्योदय कालीन करण ____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 14:56:25 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 15:54:11
भभोग _____: 54:05:47
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 4 वर्ष 2 मा 26 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सर्प
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

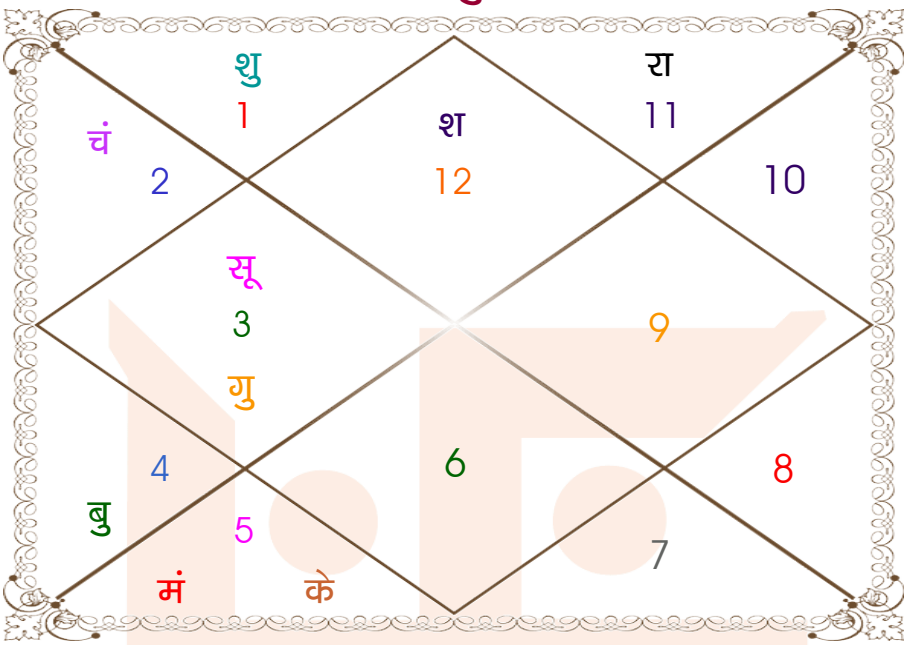

चन्द्र कुंडली

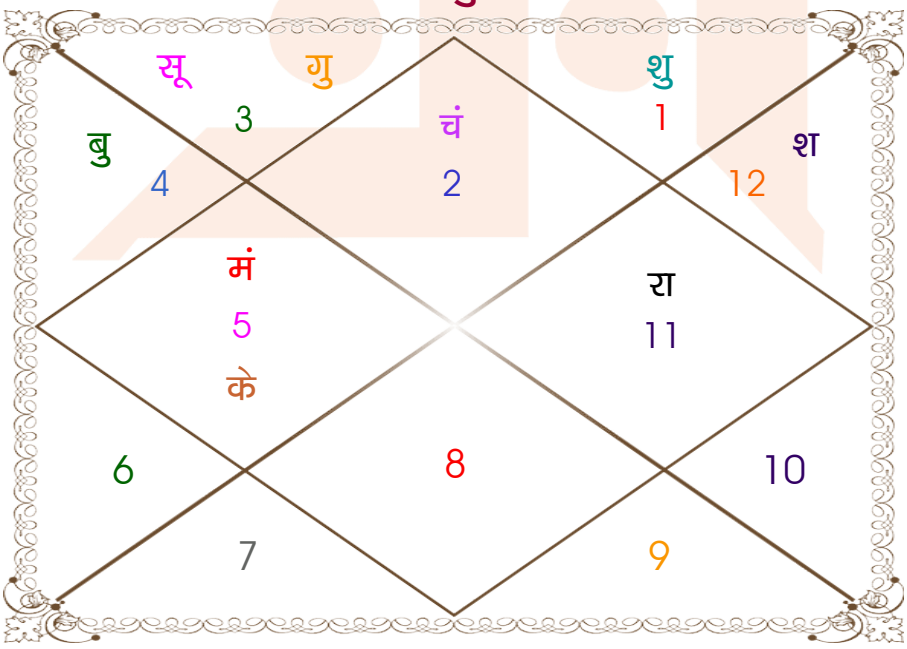

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

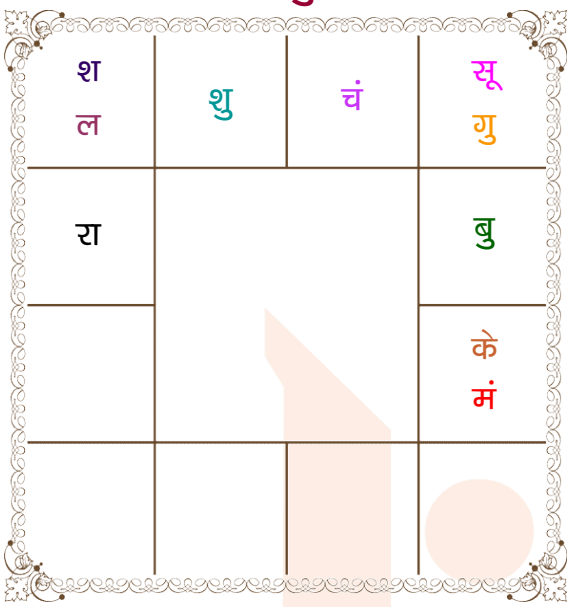

लग्न कुंडली

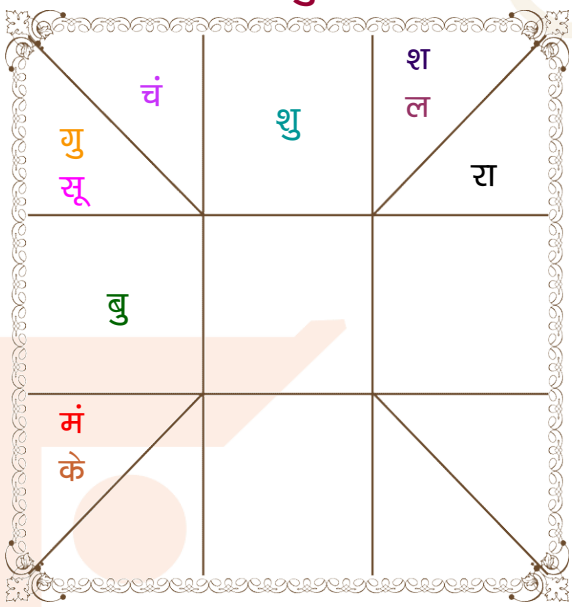

विंशोत्तरी
सूर्य 4वर्ष 2मा 26दि

सूर्य

23/06/2025

19/09/2143

सूर्य	18/09/2029
चन्द्र	18/09/2039
मंगल	18/09/2046
राहु	18/09/2064
गुरु	18/09/2080
शनि	18/09/2099
बुध	19/09/2116
केतु	19/09/2123
शुक्र	19/09/2143

योगिनी
उल्का 4वर्ष 2मा 26दि

उल्का

23/06/2025

18/09/2029

	23/06/2025
सिद्धा	18/11/2025
संकटा	20/03/2027
मंगला	20/05/2027
पिंगला	18/09/2027
धान्या	19/03/2028
भ्रामरी	17/11/2028
भद्रिका	18/09/2029

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	12:17:51	479:23:17	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	मंगल	---
सूर्य			मिथु	07:22:10	00:57:16	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	सम राशि
चंद्र			वृष	00:34:47	14:46:38	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	राहु	उच्च राशि
मंगल			सिंह	08:50:12	00:34:03	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	मित्र राशि
बुध			कर्क	00:09:23	01:29:02	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि
गुरु		अ	मिथु	08:43:27	00:13:43	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			मेष	22:53:57	01:04:01	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	सम राशि
शनि			मीन	07:22:23	00:02:02	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	27:50:14	00:07:51	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	27:50:14	00:07:51	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	05:05:08	00:03:05	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	07:55:18	00:00:24	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	---
प्लूटो	व		मक	09:05:36	00:01:09	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	10:16:33	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:12:49

लग्न-चलित

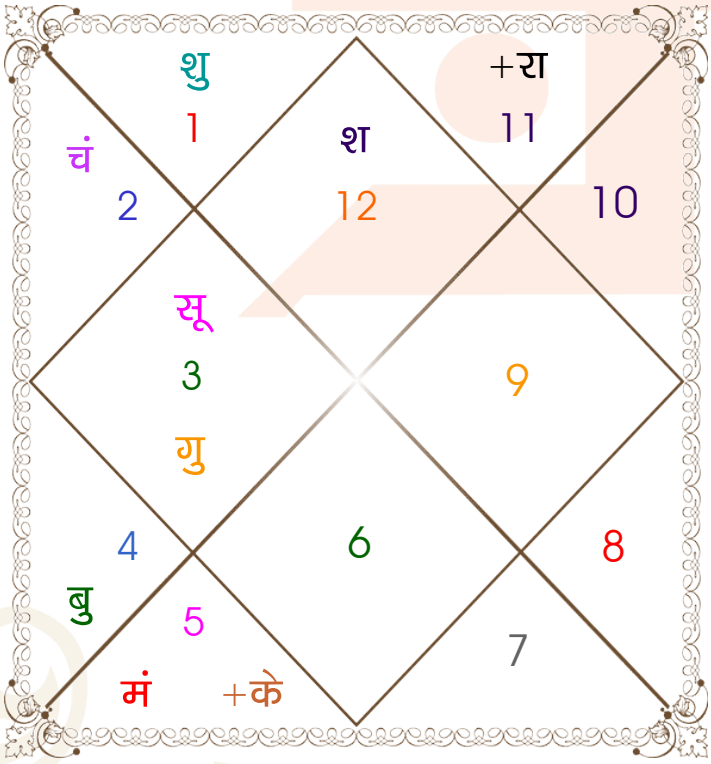

चन्द्र कुंडली

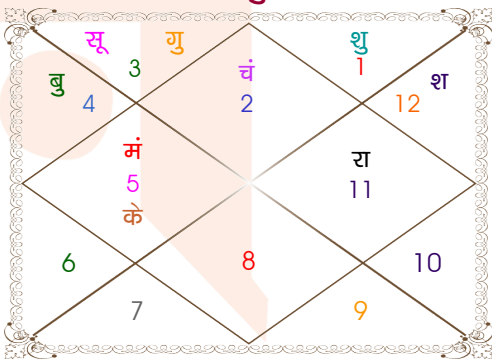

नवमांश कुंडली

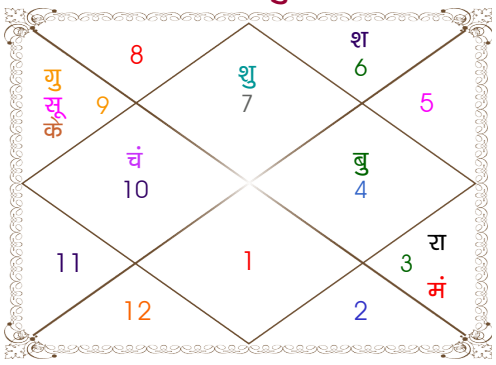

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	26:57:38	मीन	12:17:51
2	मीन	26:57:38	मेष	11:37:25
3	मेष	26:17:12	वृष	10:56:59
4	वृष	25:36:46	मिथुन	10:16:33
5	मिथुन	25:36:46	कर्क	10:56:59
6	कर्क	26:17:12	सिंह	11:37:25
7	सिंह	26:57:38	कन्या	12:17:51
8	कन्या	26:57:38	तुला	11:37:25
9	तुला	26:17:12	वृश्चिक	10:56:59
10	वृश्चिक	25:36:46	धनु	10:16:33
11	धनु	25:36:46	मकर	10:56:59
12	मकर	26:17:12	कुम्भ	11:37:25

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	12:17:51
2	मेष	17:31:51
3	वृष	15:34:23
4	मिथुन	10:16:33
5	कर्क	05:32:35
6	सिंह	05:14:59
7	कन्या	12:17:51
8	तुला	17:31:51
9	वृश्चिक	15:34:23
10	धनु	10:16:33
11	मकर	05:32:35
12	कुम्भ	05:14:59

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली

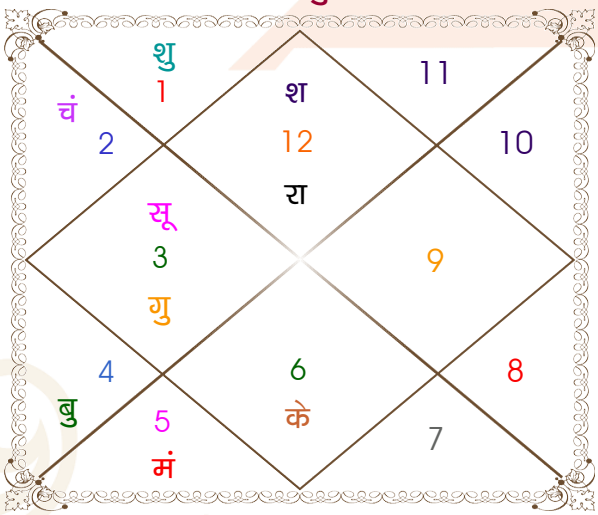

भाव कुंडली

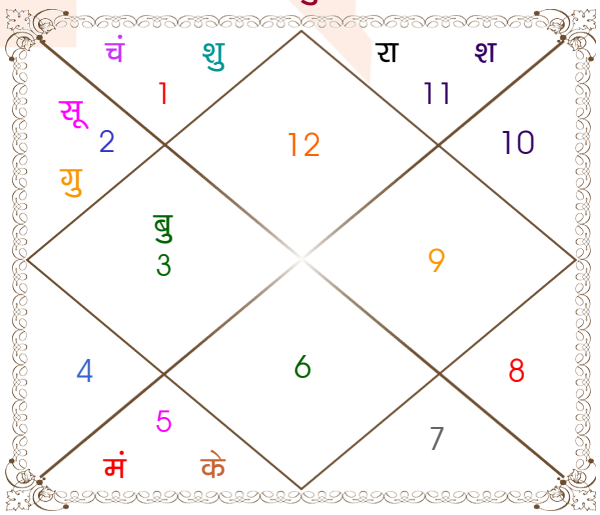

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 2 मास 26 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
23/06/2025		18/09/2029		18/09/2039		18/09/2046		18/09/2064	
18/09/2029		18/09/2039		18/09/2046		18/09/2064		18/09/2080	
	00/00/0000	चंद्र	19/07/2030	मंगल	14/02/2040	राहु	31/05/2049	गुरु	06/11/2066
	00/00/0000	मंगल	17/02/2031	राहु	04/03/2041	गुरु	25/10/2051	शनि	19/05/2069
	23/06/2025	राहु	18/08/2032	गुरु	08/02/2042	शनि	31/08/2054	बुध	25/08/2071
राहु	06/10/2025	गुरु	18/12/2033	शनि	20/03/2043	बुध	19/03/2057	केतु	31/07/2072
गुरु	25/07/2026	शनि	19/07/2035	बुध	16/03/2044	केतु	07/04/2058	शुक्र	01/04/2075
शनि	07/07/2027	बुध	18/12/2036	केतु	12/08/2044	शुक्र	06/04/2061	सूर्य	18/01/2076
बुध	13/05/2028	केतु	19/07/2037	शुक्र	12/10/2045	सूर्य	01/03/2062	चंद्र	19/05/2077
केतु	18/09/2028	शुक्र	20/03/2039	सूर्य	17/02/2046	चंद्र	31/08/2063	मंगल	25/04/2078
शुक्र	18/09/2029	सूर्य	18/09/2039	चंद्र	18/09/2046	मंगल	18/09/2064	राहु	18/09/2080

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
18/09/2080		18/09/2099		19/09/2116		19/09/2123		19/09/2143	
18/09/2099		19/09/2116		19/09/2123		19/09/2143		00/00/0000	
शनि	21/09/2083	बुध	15/02/2102	केतु	15/02/2117	शुक्र	19/01/2127	सूर्य	07/01/2144
बुध	01/06/2086	केतु	12/02/2103	शुक्र	17/04/2118	सूर्य	19/01/2128	चंद्र	08/07/2144
केतु	10/07/2087	शुक्र	13/12/2105	सूर्य	23/08/2118	चंद्र	19/09/2129	मंगल	12/11/2144
शुक्र	09/09/2090	सूर्य	20/10/2106	चंद्र	24/03/2119	मंगल	19/11/2130	राहु	24/06/2145
सूर्य	22/08/2091	चंद्र	20/03/2108	मंगल	20/08/2119	राहु	19/11/2133		00/00/0000
चंद्र	22/03/2093	मंगल	17/03/2109	राहु	06/09/2120	गुरु	20/07/2136		00/00/0000
मंगल	01/05/2094	राहु	05/10/2111	गुरु	13/08/2121	शनि	19/09/2139		00/00/0000
राहु	07/03/2097	गुरु	09/01/2114	शनि	22/09/2122	बुध	20/07/2142		00/00/0000
गुरु	18/09/2099	शनि	19/09/2116	बुध	19/09/2123	केतु	19/09/2143		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 4 वर्ष 2 मा 25 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
23/06/2025		06/10/2025		25/07/2026		07/07/2027		13/05/2028	
06/10/2025		25/07/2026		07/07/2027		13/05/2028		18/09/2028	
	00/00/0000	गुरु	14/11/2025	शनि	18/09/2026	बुध	20/08/2027	केतु	20/05/2028
	00/00/0000	शनि	30/12/2025	बुध	06/11/2026	केतु	07/09/2027	शुक्र	11/06/2028
	00/00/0000	बुध	10/02/2026	केतु	27/11/2026	शुक्र	29/10/2027	सूर्य	17/06/2028
	00/00/0000	केतु	27/02/2026	शुक्र	23/01/2027	सूर्य	14/11/2027	चंद्र	28/06/2028
	23/06/2025	शुक्र	16/04/2026	सूर्य	10/02/2027	चंद्र	10/12/2027	मंगल	05/07/2028
शुक्र	04/08/2025	सूर्य	01/05/2026	चंद्र	11/03/2027	मंगल	28/12/2027	राहु	24/07/2028
सूर्य	21/08/2025	चंद्र	25/05/2026	मंगल	31/03/2027	राहु	12/02/2028	गुरु	10/08/2028
चंद्र	17/09/2025	मंगल	11/06/2026	राहु	22/05/2027	गुरु	25/03/2028	शनि	30/08/2028
मंगल	06/10/2025	राहु	25/07/2026	गुरु	07/07/2027	शनि	13/05/2028	बुध	18/09/2028

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
18/09/2028		18/09/2029		19/07/2030		17/02/2031		18/08/2032	
18/09/2029		19/07/2030		17/02/2031		18/08/2032		18/12/2033	
शुक्र	17/11/2028	चंद्र	13/10/2029	मंगल	01/08/2030	राहु	10/05/2031	गुरु	22/10/2032
सूर्य	06/12/2028	मंगल	31/10/2029	राहु	02/09/2030	गुरु	23/07/2031	शनि	07/01/2033
चंद्र	05/01/2029	राहु	16/12/2029	गुरु	30/09/2030	शनि	17/10/2031	बुध	17/03/2033
मंगल	26/01/2029	गुरु	25/01/2030	शनि	03/11/2030	बुध	03/01/2032	केतु	15/04/2033
राहु	22/03/2029	शनि	14/03/2030	बुध	03/12/2030	केतु	04/02/2032	शुक्र	05/07/2033
गुरु	10/05/2029	बुध	27/04/2030	केतु	15/12/2030	शुक्र	05/05/2032	सूर्य	29/07/2033
शनि	07/07/2029	केतु	14/05/2030	शुक्र	20/01/2031	सूर्य	02/06/2032	चंद्र	08/09/2033
बुध	28/08/2029	शुक्र	04/07/2030	सूर्य	31/01/2031	चंद्र	17/07/2032	मंगल	06/10/2033
केतु	18/09/2029	सूर्य	19/07/2030	चंद्र	17/02/2031	मंगल	18/08/2032	राहु	18/12/2033

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
18/12/2033		19/07/2035		18/12/2036		19/07/2037		20/03/2039	
19/07/2035		18/12/2036		19/07/2037		20/03/2039		18/09/2039	
शनि	20/03/2034	बुध	01/10/2035	केतु	30/12/2036	शुक्र	28/10/2037	सूर्य	29/03/2039
बुध	10/06/2034	केतु	31/10/2035	शुक्र	04/02/2037	सूर्य	28/11/2037	चंद्र	13/04/2039
केतु	13/07/2034	शुक्र	25/01/2036	सूर्य	15/02/2037	चंद्र	18/01/2038	मंगल	24/04/2039
शुक्र	18/10/2034	सूर्य	20/02/2036	चंद्र	04/03/2037	मंगल	22/02/2038	राहु	21/05/2039
सूर्य	16/11/2034	चंद्र	03/04/2036	मंगल	17/03/2037	राहु	24/05/2038	गुरु	14/06/2039
चंद्र	03/01/2035	मंगल	03/05/2036	राहु	18/04/2037	गुरु	14/08/2038	शनि	13/07/2039
मंगल	06/02/2035	राहु	20/07/2036	गुरु	16/05/2037	शनि	18/11/2038	बुध	08/08/2039
राहु	03/05/2035	गुरु	27/09/2036	शनि	19/06/2037	बुध	12/02/2039	केतु	19/08/2039
गुरु	19/07/2035	शनि	18/12/2036	बुध	19/07/2037	केतु	20/03/2039	शुक्र	18/09/2039

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 5, 9, 2
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	81%	पराक्रम, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	73%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, भाग्योदय
पन्ना	बुध	67%	सन्तति सुख, सुख, दम्पति
नीलम	शनि	61%	स्वास्थ्य, धनार्जन, कम खर्च
गोमेद	राहु	56%	कम खर्च, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	47%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	41%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश
हीरा	शुक्र	0%	धन हानि, पराक्रम हानि, दुर्घटना

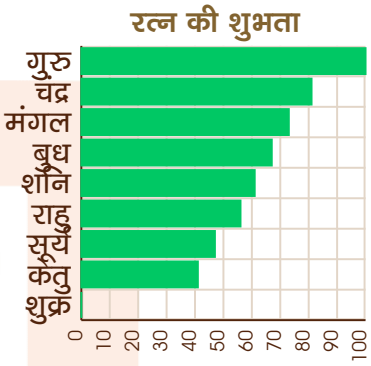

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	18/09/2029	61%	88%	80%	67%	100%	0%	47%	38%	16%
चंद्र	18/09/2039	55%	94%	73%	73%	100%	0%	61%	38%	16%
मंगल	18/09/2046	55%	88%	86%	55%	100%	0%	61%	38%	52%
राहु	18/09/2064	22%	69%	61%	67%	100%	3%	67%	69%	16%
गुरु	18/09/2080	55%	88%	80%	55%	100%	0%	61%	56%	41%
शनि	18/09/2099	22%	69%	61%	73%	100%	3%	73%	62%	16%
बुध	19/09/2116	55%	69%	73%	80%	100%	3%	61%	56%	41%
केतु	19/09/2123	22%	69%	80%	67%	100%	3%	47%	38%	58%
शुक्र	19/09/2143	22%	69%	73%	73%	100%	16%	67%	62%	52%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती द्वितीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढेसाती तृतीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसाय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली से चतुर्थ भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। लेकिन शास्त्रानुसार आपका मांगलिक दोष भंग हो जाता है इसलिए यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा इसके शुभ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में अधिकांश रूप से सुखोपभोग की सामग्री से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

ऐसे मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब अवश्य हो सकता है परन्तु इससे किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी तथा विवाह सुखद वातावरण में सम्पन्न हो जाएगा। विवाहोपरान्त अपनी पत्नी से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य भी सामान्यतया अच्छा ही रहेगा जिससे कोई अनावश्यक व्यवधान या समस्या दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न नहीं होगी।

चन्द्र कुंडली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे। साथ ही आप सम्पत्ति या जायदाद को भी प्राप्त करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव रहेगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य में पूर्ण उन्नति करने में सफल रहेंगे। समाज में मान सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगे। साथ ही एकादश भाव पर भी मंगल की दृष्टि आपकी आय साधनों में नित्य उन्नति दायक रहेगी। जिसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा जीवन में कभी भी धनाभाव नहीं रहेगा। अतः सभी प्रकार से सुख सम्पन्न रहकर आप का जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या किसी ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष नियमानुसार भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपने दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ करेंगे तो आप जीवन में भाग्यशाली पुरुष होकर समस्त भौतिक सुख संसाधनों धन वैभव तथा मान सम्मान एवं कीर्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके परस्पर संबंधों मे भी प्रगाढ़ता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा तथा किसी भी प्रकार अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न नहीं होगी जिससे सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होता है।

इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि कन्या की चन्द्र कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में ही न हो क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आप सुख संसाधनों को प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करेंगे जिससे मानसिक तनाव उत्पन्न होगा फलतः इससे आपका सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। अन्य भावों में मंगल रहने से उसका प्रभाव शुभ रहेगा जिससे जीवन में अनावश्यक कष्ट तथा परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। इससे आपका दाम्पत्य जीवन शान्त तथा सुखी रहेगा एवं प्रसन्नता पूर्वक आप अपना सांसारिक, सामाजिक तथा परिवारिक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। अतः सोच विचार कर एवं सावधानी पूर्वक निर्णय करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक के जीवन में मनोभिलाषित कार्य प्रायः पूरा नहीं होता है। यदि कार्य सिद्ध भी होता है तो थोड़ा बिलम्ब से होता है। जातक जन्म स्थान व देश से दूर चला जाता है। गुप्त शत्रुओं से जातक थोड़ा बहुत भयाक्रान्त रहता है। वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े में जातक को प्रायः हार का सामना करना पड़ता है तथा न्यायालय से भी थोड़ा बहुत नुकसान पाता है और समय-समय पर बदनामी का भय होता रहता है।

इस योग के कारण जातक का जीवन रहस्यमय रहता है तथा मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग प्रायः परेशान रहता है। कोई न कोई रोग व्याधि समय-समय पर परेशान करता रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। आमदनी से विशेष खर्च रहता है। परिणामस्वरूप जातक को आर्थिक विपन्नता लग जाती है। जातक बहुत कर्जदार हो जाते हैं और कर्जा उतारने हेतु किये गए प्रयासों में आंशिक रूप में असफलता मिलती है। जीवन में प्रायः अनेकों बार संघर्ष करना पड़ता है। जातक को शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है। सामाजिक मान सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मृत्यु के उपरान्त विशेष रूप से ख्याति (प्रसिद्धि) मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।
- शुक्र, बुध और राहु 2, 5, 9 या 12 वें भाव में स्थित है।

आपकी कुडली में चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ

आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील

रहेंगे।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार,

विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(23/06/2025 - 18/09/2029)

सूर्य की महादशा 23/06/2025 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की अवधि के बाद 18/09/2029 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। सूर्य यश, प्रतिष्ठा, शासकीय कृपा, उच्चाधिकार तथा सामान्य सफलता का प्रतिनिधित्व करता है और चतुर्थ भाव माता, धन गाड़ी और पारिवारिक खुशी को सूचित करता है। अतः इस दशा में आप को धन-सम्पत्ति और गाड़ी की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आप सतत् उत्साही और क्रियाशील रहेंगे। किन्तु आपको अधिक परिश्रम तथा उत्तेजना से बचने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि इनके कारण आपको रक्तचाप तथा हृदय-वेदना जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। किन्तु उचित उपाय से इससे बचा जा सकता है। सम्बन्धियों के साथ संबंधों में तनाव के कारण मानसिक शान्ति में कमी हो सकती है।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आपको धन की प्राप्ति होगी। आपको अचल तथा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको इस अवधि में यातायात से लाभ होगा। आपको भूमि तथा भवन की प्राप्ति और भूमि-उत्पाद से लाभ होगा। इस दशा में सट्टे का परित्याग करें क्योंकि यह लाभदायक नहीं होगा।

व्यवसाय :

दशम भाव पर सूर्य की दृष्टि जीवन-वृत्ति के लिये अत्यंत शुभ है। उन्नति, शक्ति तथा अधिकार प्राप्ति की सम्भावना है। आपको शासन अथवा अन्य उच्च प्राधिकारों से मान्यता प्राप्त हो सकती है। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे। आपको अपने उच्चाधिकारिओं से सद्भाव तथा सहयोग मिलेगा। आप प्रशासनिक कार्यों में श्रेष्ठ रहेंगे। आपको नौकरी में पदोन्नति मिलेगी और आमदनी तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यवसायियों को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ मिलेगा। इस दशा में आप कुछ अनुबन्ध कर सकते हैं। व्यवसाय से सम्बन्ध यात्रा हो सकती है। इस दशा में व्यवसाय के क्षेत्र में आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है।

पारिवारिक जीवन :

यदि आप अपनी इच्छाओं को दूसरों पर आरोपित न करें तो आपको पारिवारिक सुख मिलेगा। आप समाज के प्रति निष्ठा रखते हैं और उदार हैं। आपके अनेक मित्र हैं, किन्तु आप स्वच्छन्द हैं और आपकी इच्छाशक्ति अत्यन्त प्रबल है जिससे आपको कभी-कभी विरोध का सामना करना पड़ सकता है। सन्तानों से सम्बन्ध में कभी-कभी तनाव उत्पन्न हो सकते हैं। आपके जीवन साथी को समृद्धि, कार्य के अच्छे अवसर, यश, प्रतिष्ठा, शक्ति, अधिकार आदि की

प्राप्ति होगी। आपकी माता के स्वास्थ्य को देख-रेख की जरूरत है। आपको पैतृक सम्पत्ति तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को इस अवधि में लाभ मिलेगा ओर उनके रुके हुए कार्य पूरे होंगे। बड़े भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उन्हें अपने कार्यों में सफलता तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपका आकर्षण वेदान्त-दर्शन अथवा आध्यात्मिक विषयों की ओर हो सकता है। आपका समय धार्मिक कार्यों में व्यतीत होगा। आपकी विज्ञान के सभी विषयों में रुचि होगी।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(23/06/2025 - 06/10/2025)

आपके लिए सूर्य की महादशा 23/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 23/06/2025 को प्रारंभ होकर 06/10/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में भाग्य मध्यम रहेगा। धर्म और अध्यात्म में समय व्यतीत करेंगे। कार्यों में विरोध हो सकता है, अतः विवाद से बचें। शत्रुओं का नाश होगा। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। समाज सेवा से लाभ होगा।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है, मगर उनकी प्रतिरोधक शक्ति उत्तम रहेगी। आपके पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी और उनकी व्यस्तता बढ़ेगी। माता की धर्म में रुचि बढ़ेगी। भाई-बहनों को कार्य में लाभ होगा और ख्याति मिलेगी। आपकी संतान को परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को वर्तमान स्तर बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। व्यापारियों को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। काफी दिनों से चल रही बीमारी से सावधान रहें, विशेषतः नेत्रों और अस्थियों का ध्यान रखें; ज्वर आदि से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें और नीले पदार्थों का दान करें।

ॐ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(06/10/2025 - 25/07/2026)

आपके लिए सूर्य की महादशा 23/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 06/10/2025 को प्रारंभ होकर 25/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आप जायदाद खरीद सकते हैं या वर्तमान मकान आदि में परिवर्तन कर सकते हैं। माता-पिता से सुख और समर्थन मिलेंगे। उनके साथ संबंध उत्तम रहेंगे। वाहन सुख रहेगा। प्रोन्नति हो सकती है। शुभकार्यो पर खर्चे बढ़ सकते हैं। अध्यात्म में सफलता मिलेगी। अप्रत्याशित धनलाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार को प्रसिद्धि मिलेगी। वे अपने शत्रुओं को परास्त करेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे, उनका जीवन सुखमय होगा। आपके पिता को अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। उनका मन अध्यात्म में लगेगा। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, उन्हें प्रसिद्धि और सुख प्राप्त होंगे। भाई-बहनों को धन मिलेगा, उत्तम नौकरी प्राप्त होगी, मातहतों का सहयोग मिलेगा। आपके बच्चों का मन पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य विषयों में लग सकता है।

सेवारत जातकों को लाभ मिलेगा। व्यापारियों को लाभ अधिक, खर्च कम रहेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर सर्दी, जुकाम आदि और शरीर के ऊपरी भाग में कष्ट हो सकता है। दुखों से बचाव के लिए केसर, हल्दी, चना और पीली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(25/07/2026 - 07/07/2027)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 25/07/2026 को प्रारंभ होगी और 07/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

आप शत्रुओं का नाश करने में सफल होंगे। विरोधियों और बीमारी से लड़ने की शक्ति आप में विद्यमान रहेगी। आपका विवाह हो सकता है। छोटे भाई-बहनों से खुशी मिलेगी। आप किसी संस्था या विभाग के अध्यक्ष बन सकते हैं। अगर सरकारी नौकरी में हैं तो सफल रहेंगे।

जीवनसाथी को धन मिल सकता है। अचल संपत्ति भी क्रय कर सकते हैं। आपके पिता को परंपरागत निवेश से लाभ होगा। माता को खेती की भूमि से लाभ होगा; वे तीर्थयात्रा पर जा सकती हैं। आपके भाई-बहनों के आप से संबंध उत्तम रहेंगे। उन्हें प्रतिष्ठित मित्रों से लाभ होगा। आपके बच्चों के आप से संबंध उत्तम रहेंगे, मगर विवाद से बचें।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्य और धन का संकेत है। परामर्शदाताओं की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अत्यधिक खर्चे से सावधान रहना चाहिए।

स्नायुतंत्र की देखभाल करें। थकान से बचें। कष्टों से छुटकारे के लिए शनि की आराधना और काली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(07/07/2027 - 13/05/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 23/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 07/07/2027 को प्रारंभ होकर 13/05/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको सट्टेबाजी और निवेश से लाभ होगा। ललित कलाओं और कविता में रुचि रहेगी। आपको परामर्शदाता के रुप में कार्य करने का निमंत्रण मिल सकता है। आपकी अध्यात्म और वेदों में रुचि हो सकती है। घर में शिशु का जन्म हो सकता है। आपको प्रसिद्धि मिल सकती है। आपको खेलकूद, साहित्य, कला और मनोविज्ञान आदि में दिलचस्पी हो सकती है। आपकी चिंतनशक्ति और कल्पना प्रखर रहेंगी जिनसे आप नये विचारों का प्रतिपादन कर सकते हैं। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

संतान से सुख मिलेगा। जीवनसाथी सा व्यापार में साझेदार का जीवन सुखी और

सुविधापूर्ण होगा। आपके पिता की यात्राएं होंगी और धर्म में रुचि रहेगी। माता की आय में वृद्धि होगी। भाई-बहनों को व्यापार में लाभ होगा। संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी और विभिन्न गतिविधियों में उत्साह बना रहेगा।

व्यापारियों के कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। सेवारत जातकों का तबादला हो सकता है, खर्च बढ़ेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

स्नायुतंत्र, मष्तिष्क के रोगों से बचाव करें। हरी वस्तुओं जैसे हरे वस्त्र, हरी दाल आदि का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(13/05/2028 - 18/09/2028)

आपके लिए सूर्य की महादशा 23/06/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 13/05/2028 को आरंभ होकर 18/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में कर्ज़ अगर है तो आप चुकाने में सक्षम होंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा ; उत्साह और साहस से परिपूर्ण रहेंगे। सामान्यतः आप प्रसन्न रहेंगे। यात्रा, निवास में परिवर्तन आदि संभव हैं। किस्मत और कार्य में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। अध्यात्म और गूढ़विद्या में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं होंगी, परिवर्तन का संकेत है। आपके पिता को विदेशियों से धनलाभ होगा, संतान के साथ संबंध उत्तम रहेंगे, धन, सम्मान प्राप्त होंगे। माता को अपने भाइयों से लाभ होगा, धन प्राप्त होगा, लघु यात्राएं होंगी। आपके भाई-बहनें के लिए समय भाग्यशाली है।

आपकी संतान को धनलाभ होगा; पढ़ाई में बाधा आ सकती है। आपकी वरिष्ठ संतान को परिवार में मधुर संबंध बनाने में सहयोग देना चाहिए।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यवान रहेंगे, उच्चाधिकारियों से सहयोग मिलेगा, लाभ होगा। परामर्शदाता व्यस्त रहेंगे; विदेश से लाभ हो सकता है। व्यापारियों को लाभ मध्यम रहेगा।

दांत और उत्सर्जन तंत्र के रोग, फोड़े, चोट आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की उपासना करें, श्वान या अन्य पालतू जानवर को भोजन दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(18/09/2028 - 18/09/2029)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

महादशा :– चन्द्र
(18/09/2029 - 18/09/2039)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 18/09/2029 को आरम्भ होगी और 18/09/2039 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र तृतीय भाव में अवस्थित है जो मानसिक प्रवृत्ति, बुद्धि अध्ययन के प्रति झुकाव, साहस, आपके भाई-बहनों, अफवाहों, गले, हँसली, बाँहों और स्नायु तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और ईश्वर में आपकी निष्ठा होगी।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुख और उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्त्तव्यों का पालन उत्तम ढंग से करेंगे। किसी बड़े रोग या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

तृतीय भाव का स्वामी होने के कारण चन्द्र इस बात के संकेत देता है कि आपकी धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी जिससे आपका जीवन सुखमय, अनुकूल तथा सुव्यवस्थित होगा। इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपनी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। अगर व्यवसायी हैं तो नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे और अगर सेवारत हैं तो आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए नये मार्गों की खोज में रहेंगे जिसके लिए आप यात्राओं पर भी जा सकते हैं।

व्यवसाय :

आप अपनी व्यावसायिक स्थिति में सुधार के लिए यात्राओं पर जा सकते हैं क्योंकि आप सक्रिय, यात्रा-प्रिय तथा बहादुर हैं। व्यवसाय में सुधार के लिए किसी कार्य का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपके मस्तिष्क में नये विचार उभरेंगे जिनकी सामाजिक और व्यवसाय के क्षेत्र में सराहना होगी और वे जीवन की उन्नति और अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन पूर्ण अनुकूल तथा सौहार्द्रपूर्ण रहेगा क्योंकि आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र की आपके पिता के भाव अर्थात् नवम भाव पर दृष्टि है। पिता के साथ संबंधों में सुधार होगा और दैनिक और व्यावसायिक कार्यों में आपकी बहुत मदद करेंगे। आपको माता से कुछ प्राप्त होने के संकेत हैं। आपके भाई-बहनों के साथ आपके संबंध सौहार्द्रपूर्ण रहेंगे। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और कुल मिलाकर पारिवारिक वातावरण तथा जीवन संतोषजनक रहेंगे।

शिक्षा पशिक्षण :

जीवन में नये विषयों के अध्ययन के लिए यह अवधि उत्तम सिद्ध होगी अध्ययन जारी रखने में आपकी रूचि होगी और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(18/09/2029 - 19/07/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 18/09/2029 को प्रारंभ होकर 18/09/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 18/09/2029 को प्रारंभ होकर 19/07/2030 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

इस अवधि में आप उपरोक्त क्षेत्रों में विफलता के शिकार हो सकते हैं। स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। दुर्घटना से सावधान रहें। आपके संवेदनशील होने के कारण छोटे भाई-बहनों से संबंध बिगड़ सकते हैं। धनहानि भी संभव है।

अरिष्ट से बचाव के लिए दायें हाथ की अनामिका में चांदी की अंगूठी में जड़ा 5 रत्ती का असली मोती धारण करें। यह कार्य सोमवार के दिन प्रातःकाल स्नानादि के उपरांत चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए करें। अंगूठी धारण करने से पूर्व उसे दूध से धो लें।